

## दधीचि :

दधीचि एक परोपकारी ऋषि थे । वे सरस्वती नदी के किनारे रहते थे । वृत्रासुर नामक एक बड़ा पराक्रमी राक्षस था । उससे मनुष्य क्या देवतागण भी डरते थे । उसके आतंक से स्वर्ग में हाहाकार मच गया । उनसे रक्षा पाने के लिए देवगण भगवान विष्णु के पास पहुँचे । भगवान विष्णु ने सलाह दी कि ऋषि दधीचि की अस्थियों से बज्र बनाया जायेगा । उसी बज्र से ही वृत्रासुर मारा जायेगा । भगवान विष्णु से परामर्श लेकर देवगण ऋषि दधीचि के आश्रम पहुँचे । ऋषि दधीचि ने देवगण का यथोचित आदर सत्कार किया । उनके शुभागमन का कारण पूछा । उनसे सारी बातें सुनकर ऋषि दधीचि ध्यान मुद्रा में बैठ गये । उनकी आत्मा परमात्मा में बिलीन हो गयी । उनकी अस्थियों से बज्र बनाया गया । उस बज्र से वृत्रासुर मारा गया । परोपकारी ऋषि दधीचि ने देवताओं की भलाई के लिए अपनी हड्डियाँ दे दी थीं ।

### प्रश्न और अभ्यास

#### 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो/तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) तरुवर और सरवर क्या करते हैं ?
- (ख) शिवि राजा ने क्यों मांस दान दिया ?
- (ग) छोटों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए – क्यों ?
- (घ) ऋषि दधीचि ने किसलिए हाड़ या अस्ति दान दिया था ?

#### 2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

- (क) तरुवर फल नहीं खाता है, सरवर पिय हिं न पान ।
- (ख) जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।
- (ग) मांस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीचि ।

#### 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

- (क) तरुवर क्या नहीं खाता है ?
- (ख) सरवर क्या नहीं पीता है ?

- (ग) सुजान किसलिए संपत्ति का संचय करता है ?  
(घ) बड़े लोगो को देखकर लघु का क्या नहीं करना चाहिए ?  
(ङ) सुई की जगह अगर तलवार मिलजाए तो काम होगा या नहीं ?  
(च) परोपकार करते समय क्या जरूरी नहीं है ?  
(छ) शिवि भूप ने क्या दान दिया था ?  
(ज) किसने अपनी हड्डियों का दान दिया था ?

### भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों के खड़ीबोली-रूप लिखिए :  
नहिं, सरवर, पिय, पान, तलवारि, काज
2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :  
पर, हित, सुजान, बड़ा, लघु, उपकार
3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :  
सरवर, तरु, पान, संपत्ति, सुजान, लघु, तलवारि, भूप, यारी, हाड़
4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्णय कीजिए :  
फल, संपत्ति, सुई, तलवार, मांस
5. 'को' परसर्ग का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाइए ।  
जैसे – राम को किताब दो ।



# मनुष्यता



मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय :

मैथिली शरण गुप्त का जन्म चिरगाँव झाँसी में सन् 1886 में हुआ था। उनकी पढ़ाई घर पर ही हुई। उन्होंने हिन्दी के अलावा संस्कृत, बंगला, मराठी और अँग्रेजी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। बचपन से ही वे कविता लिखने लगे थे। अपने जीवन काल में ही वे राष्ट्रकवि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गुप्तजी का परिवार रामभक्त था। उन्होंने भारतीय जीवन के आदर्श, इतिहास और संस्कृति को अपने काव्य का आदर्श बनाया। स्नेह, प्रेम, दया, उदारता आदि मानवीय भावों को भी साहित्य के माध्यम से उजागर किया।

यह कविता :

इस कविता में मनुष्य को महान बनने की प्रेरणा दी गई है। कवि कहते हैं जिसने इस धरा पर जन्म लिया है, एक न एक दिन अवश्य मरेगा। इसलिए हमें कभी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। हम ऐसे मरे कि मरने के बाद भी अमर हो जाएँ। यदि हम जीवन भर सत्कर्म नहीं करेंगे तो हमें अच्छी मृत्यु नहीं मिलेगी अर्थात् मरने के बाद कोई याद नहीं रखेगा। जो व्यक्ति दूसरों के काम आता है वह कभी मरता नहीं है। क्योंकि वह कभी भी अपने लिए नहीं जीता है। पशु जिस प्रकार अपने आप मरते रहते हैं उसी तरह की प्रवृत्ति मनुष्य में भी कई बार दिखाई देती है जो ठीक नहीं है। मनुष्य को तो मनुष्य की मदद करने में प्राण दे देना चाहिए।

संपत्ति के लोभ में पड़कर हमें गर्व से नहीं इठलाना चाहिए। कुछ अपने मित्र और परिवार आदि लोगों को देखकर भी अपने को बलवान नहीं मानना चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई भी अनाथ या गरीब नहीं होता। यहाँ कोई भी अनाथ नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर

जो तीनों लोकों के नाथ हैं, वे सदा सबके साथ रहते हैं । क्योंकि ईश्वर दीनबंधु हैं । गरीबों पर दया करने वाले भी हैं परम दयालु हैं । विशाल हाथ वाले हैं अर्थात् वे सबकी मदद करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं । जो अधीर होकर अहंकारी बन जाते हैं वे तो सच में भाग्यहीन हैं । मनुष्य तो वही है जो मनुष्य की सेवा करे और उसके लिए मरे । मनुष्य के लिए प्रत्येक मनुष्य बंधु है, परम मित्र है । इसे हमें समझना होगा । यही हमारा विवेक है । एक ही भगवान हम सब के पिता हैं । वे पुरातन प्रसिद्ध पुरुष हैं । वे ईश्वर हैं । यह तो सत्य है कि हमें अपने कर्मों के अनुरूप फल भोगना होता है । इसलिए बाहरी तौर पर हम भले ही अलग अलग दिखाई देते हैं पर अंदर से एक हैं । हम में अन्तर की एकता है । वेद ऐसा ही कहते हैं । समाज में अनर्थ तब होता है जब मनुष्य दूसरे को अपना बंधु नहीं मानता है । मनुष्य को ही मनुष्य की पीड़ा को दूर करना होगा । इसलिए सही माईने में मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है ।

## मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,  
मरो परंतु यों करो कि याद जो करें सभी ।  
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,  
मरानहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।  
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ चित्त सें,  
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।  
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,  
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।  
अतीव भाग्यहीन हैं अधीर भाव जो करे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥